पयूर्षण पर्व में बही धर्मगंगा

कन्छेदीलाल जैन, विदिशा। नगर वासियों का यह पुण्योदय है कि इस वर्ष पयूर्षण पर्व में संत शिरोमणि आचार्यश्री 108 विद्यासागरजी महाराज के ससंघ चातुर्मास का सुयोग नगर को प्राप्त हुआ है। शीतलधाम, हरीपुरा में धर्मरुपी गंगा में अवगाहन करने का सुअवसर धर्मानुरागी बंधुओं को प्राप्त हुआ। प्रात: श्रीजी का अभिषेक, शांतिधारा आचार्यश्री के मुखारबिंद से तत्पश्चात सामूहिक पूजा आनंदपूर्वक संपन्न हुयी। प्रतिदिन प्रवचन में आचार्यश्री के मुखारबिंद से तत्वार्थ सूत्र के एक अध्याय का अर्थ समझाया जाता था । सायं 6 बजे गुरु भक्ति पश्चात सायंकालीन सामायिक, रात्रि में विभिन्न महिला मंडलों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुए। आचार्यश्री के ससंघ के दर्शन हेतु पधारे हजारों श्रद्धालुओं के भोजन इत्यादि की उत्तम व्यवस्था समाज के विभिन्न संगठनों द्वारा की गयी।

पयूर्षण पर्व सानंद संपन्न होने के पश्चात क्षमावाणी का कार्यक्रम आचार्यश्री के सानिध्य में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। प्रात:काल की बेला में प्रवचन के समय में उपस्थित समाजजनों से क्षमा याचना कर आचार्यश्री ने सभी को विस्मित कर दिया। उन्होंने कहा कि क्षमा कायरों का नहीं, वीरों का आभूषण है। कायर तो क्षमा कर ही नहीं सकते है। इसके पूर्व जिन श्रावकों ने पयूर्षण पर्व में पांच या उससे अधिक उपवास किये उन सभी का सम्मान शीतल विहार न्यास की ओर से किया गया।

प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी क्षमावाणी का जुलूस शीतलधाम मंदिर से प्रारंभ होकर नगर के विभिन्न मार्गों से होते हुए पुन: शीतलधाम मंदिर पर समाप्त हुआ। गोवंश की रक्षा हेतु संरक्षण निधि हेतु समाज से अपील की गयी जिसमें समाजजनों ने यथाशक्ति सहयोग प्रदान किया। सकल दि. जैन समाज के अध्यक्ष श्री हृदयमोहनजी द्वारा मंच से आचार्यश्री ससंघ से शीतल विहार न्यास एवं समाज की ओर से क्षमायाचना की गयी। आचार्यश्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि आज के श्रावक दुर्वद्धि टेड़ी जाति वाले है श्रमण तो दिन में 3 बार सभी जीवों को क्षमायाचना करते है वे तो नारकीयों से भी क्षमायाचना करते है प्रभु बनने के पहले गलती होना स्वाभाविक है गलतियों को स्वीकार करना उपर जाने का सोपान है। वर्तमान में गलतियां ज्यादा हो रही है खुद न जाने, ना माने, लेकिन हर बात को अनावश्यक तानते है, दूसरों का अस्तित्व स्वीकार न करना भी अपराध है। कुपमंडुक के स्थान पर मंडुक बनने का प्रयास करना चाहिए। उलझे हुए मनुष्यों को सुलझे पशुओं का उदाहरण देते हुए सावधान किया। सभी जीवों पर दया भाव रखने से विकास का मार्ग खुलता है तत्पश्चात समाज जनों से एक दूसरे गले मिलकर क्षमायाचना की।

पन्ना – अभिषेक जैन अभि, पन्ना। आत्म साधना, आत्म आराधना का महान् सनातन पर्व पर्युषण पर्व श्री 1008 चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान के नाम से सुरभित पन्ना नगर में बहुत आन्नद, उल्लास एवं उत्साह के साथ संपन्न हुआ। धर्म के दश लक्षण अर्थात दस धर्मों के दिन सुबह से मंदिर जी में अभिषेक, शांतिधारा, पूजन तथा तत्वार्थ सूत्र जी पर प्रवचन, शाम को आरती, प्रवचन एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों में सभी ने बहुत ही उत्साह एवं आनन्द पूर्वक धर्ममय वातावरण में अपने परिणामों में विशुद्धी को बढाया। व्रतों के समापन पर आनन्द मेले का आयोजन कर क्षमावाणी पर्व मंनाया गया जिसमे सभी ने वात्सल्य से अभिभूत होकर विगत वर्ष में जाने अनजाने की गई गलतियों के लिये एक दूसरे क्षमा मांगी। पर्युषण पर्व के समापन पर बडा बाजार स्थित मंदिर जी से भगवान की शोभा यात्रा निकाली गई जो शहर के सभी प्रमुख मार्ग से होते हुये धाम मोहल्ला स्थित मंदिर पहुँची जहाँ पर भगवान का अभिषेक शांतिधारा व पूजन हुआ तत्पश्चात श्री जी की शोभा यात्रा वापस बड़ा बाजार स्थित मंदिर जी में अभूतपूर्व धर्म की प्रभावना करते हुये संपन्न हुई।

पन्ना जिले में ग्राम सलेहा में स्थित आद्य शासन नायक आदि ब्रम्ह श्री 1008 आदिनाथ भगवान के अतिशय क्षेत्र श्रेयांसगिरी में ससंघ विराजमान बुंदेलखण्ड के प्रथमाचार्य गणाचार्य संत शिरोमणि, अध्यात्म योगी डॉ. श्री 108 विराग सागर जी महाराज के पावन सानिध्य में दश लक्षण पर्व ऐतिहासिक आन्नद के साथ मनाया गया। आचार्य श्री ने धर्म के दस लक्षणों अर्थात दस धर्मो का स्वरुप का विस्तृत वर्णन किया जिससे धर्म के प्रति लोगों की श्रद्धा बलवती हुई। ये क्षेत्र का एवं आचार्य श्री का ही अतिशय है कि आस पास के सारे अजैन लोगो ने आचार्य श्री के पादमूल में मांसाहार का त्याग किया एवं कई व्रत, संयम एवं नियम लिये। अभी आचार्य श्री के द्वारा पन्ना जिले के सभी स्कूलो में बच्चों को संस्कारित करने के लिये उनमे राष्ट्र एवं समाज के समर्पित रहने व उनके उत्थान एवं विकास के प्रयास करने के लिये बच्चों में अच्छे संस्कार पल्लवित करने हेतु शाकाहार एवं व्यसनमुक्ति शिविर लगाने की प्रेरणा दी जा रही है।

झाँसी – राजेश जैन, झाँसी । झाँसी नगर के विभिन्न स्थानों पर स्थित जैन मंदिरों में पयूर्षण पर्व हर्षोल्लास के साथ सानंद सम्पन्न हुये। प्रात:काल की बेला में नित्यमय अभिषेक एवं संगीतमय पूजा विधान अनवरत दस दिनों तक चलता रहा। दोपहर में तत्वार्थसूत्र की कक्षा एवं संध्या काल में तीर्थंकरों की आरती जिसमें सभी ने उत्साह के साथ भाग लिया, तदुपरांत उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग, आकिंचन एवं ब्रह्मचर्य धर्म पर अहमदाबाद से पधारे विद्वान प्रो. शेखरचंद जैन के सारगर्भित प्रवचन के माध्यम से समाज को धर्म का मर्म बताया । पयूर्षण के बाद समाज द्वारा नगर में विमान भ्रमण के उपरान्त श्रीजी का अभिषेक एवं अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न हुए। इन दस दिनों में विभिन्न जैन संस्थाओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम में नाटक मंचन, धार्मिक, अंताक्षरी, प्रश्न मंच, भाषण, भजन प्रतियोगिता एवं ओजस्वी विचारों के माध्यम से ''बच्चों का माता–पिता के प्रति कर्तव्य एवं बहुओं का सास–ससुर के प्रति कर्तव्य'' विषय पर वक्ताओं ने अपने विचारों से अवगत कराया। इसके उपरान्त श्रेष्ठ वक्ताओं को पुरस्कृत किया गया। पयूर्षण के उपरान्त क्षमावाणी का विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमे समाजजनों ने उनके द्वारा वर्षभर में जाने अनजाने में की गई, गलतियों पर सभी से क्षमा याचना की।

गलती करना सफलता का सूत्र बन सकता है – 108 मुनि श्री सुव्रत सागरजी

विशाल जैन पवा, तालबेहट। सिद्ध क्षेत्र पावागिरी में दशलक्षण महापर्व एवं सिद्धचक्र महामंडल विधान के समापन पर विमानोत्सव के आयोजन के साथ क्षमावाणी महापर्व धूमधाम से मनाया गया। सुबह से ही भारी संख्या में श्रद्धालुओं ने पहुँचकर मूलनायक भगवान पार्श्वनाथ स्वामी का अभिषेक पूजन किया। मुनिश्री सुव्रतसागर महाराज ने मंत्रोच्चार करते हुए शांतिधारा का आयोजन कराया, भक्तगण मंगल आरती के कार्यक्रम में प्रभु की भक्ति में झूम उठे। मुख्य कार्यक्रम दोपहर की बेला में आयोजित किये गये, जिसमें विमानोत्सव के अंतर्गत श्रीजी की भव्य शोभायात्रा निकाली गयी। धर्मावलंबी श्रीजी को विमान में लेकर चल रहे थे, सबसे आगे मुनिश्री एवं उनके पीछे युवक–युवतियां एवं बच्चे सत्य, अहिंसा के नारे एवं मुनिश्री सुव्रतसागर एवं भगवान पार्श्वनाथ और महावीर स्वामी के जयकारे लगाते हुए चल रहे थे, महिलाएं मंगल गीत गाती हुयी चल रही थीं। कार्यक्रम के प्रारंभ में रजनी दीदी, बबीना ने मंगलाचरण किया तत्पश्चात आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज का चित्र अनावरण, द्वीप प्रज्वलन, ध्वजारोहण, समस्त वेदी के शिखरों पर ध्वजारोहण, कलशाभिषेक एवं फूलमाल का आयोजन किया गया। मुनिश्री सुव्रत सागर महाराज का पाद प्रक्षालन कर शास्त्र भेंट किया एवं महाआरती की गयी। इस अवसर पर मुनिश्री ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि हमें जीवन में क्षमा को धारण करना चाहिए, क्रोध सभी पापों की जड़ है, क्षमा मांगना और क्षमा कर देना दोनो श्रेष्ठ है। मुनिश्री ने कहा कि जब मनुष्य का जन्म होता है तब उसे किसी न किसी के आश्रय की जरुरत होती है, मनुष्य पर्याय सभी योनियों में श्रेष्ठ रत्न है, हमें जाति और धर्म से ही नहीं अपितु क्रियाओं, आचरणों और गुणों से भी जैन बनना है। गलती करना आदमी का स्वभाव है लेकिन यदि उससे सीख न ली जाय तो कभी भी हमारा कल्याण नहीं हो सकता। और यदि पहली बार में ही गलती से सीख ले ली जाये तो गलती करना सफलता का सूत्र बन सकता है, सही निर्णय लेना हमारी सफलता का राज है, अनुभव से सही निर्णय लेना सीखते हैं और अनुभव हमें गलतियों से ही मिलता है। सभी ने पयूर्षण पर्व में दस धर्मों की आराधना के द्वारा आत्मा को पवित्र बनाया है, अब हमें बैर को मिटाने के लिए जीवन में की हुई गलतियों के लिए क्षमा मांगकर क्षमावाणी महापर्व को सार्थक बनाना है। अंत में सभी ने एक दूसरे से गतवर्ष में हुई गलतियों के लिए क्षमा मांगी एवं गले मिलकर क्षमावाणी पर्व मनाया। संचालन श्री ज्ञानचंद्र पुरा एवं आभार श्री जयकुमार कंधारी ने व्यक्त किया।

इन्दौर गोलालारीय समाज की बहुआयामी पारिवारिक पुस्तिका 'प्रयास' के प्रकाशन का कार्य प्रगति पर है। इस पुस्तिका में मालवा एवं निमाड़ क्षेत्र में निवासरत गोलालारीय परिवार की जानकारी प्रकाशित की जाना है। जिन परिवारों ने जनगणना फार्म जमा नहीं कराये है वे शीघ्र ही जमा करायें एवं जिन परिवारों को फार्म प्राप्त नहीं हुए है वे 9329524227, 9425903301, 9424013136 पर संपर्क कर फार्म प्राप्त कर सकते है। विशेष – नगर में अध्ययनरत/नौकरी/व्यवसाय कर रहे एकल व्यक्ति भी अपनी जानकारी अवश्य देवें। समाज जनों से सादर अनुरोध है कि वे इस सूचना की जानकारी शहर में आये नवीन परिवारों या शिक्षारत विद्यार्थियों को अवश्य देवें।